Dr. Sangita Kumari Sah
B.A. Part-I (H) 1st paper.

Physiological Correlates of Emotion.

संवेग की अवस्था में व्यक्ति में महत्वपूर्ण शारीरिक परिवर्तन एवं सहसंबंधता होती है। इस तरह के शारीरिक परिवर्तन को दो भागों में बांटा जाता है—!

(i) बाह्य शारीरिक परिवर्तन
(ii) आन्तरिक शारीरिक परिवर्तन

(i) बाह्य शारीरिक परिवर्तन
संवेगों में होने वाले बाह्य शारीरिक परिवर्तन से तात्पर्य ऐसे परिवर्तनों से है जो स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होते हैं तथा जिसे हम अपनी आँखों से देख सकते हैं। जैसे: क्रोध से चेहरा लाल होना, होंठ काँपने लगना आदि। भय के संवेग की स्थिति में व्यक्ति का चेहरा सूखा नजर आता है। तथा वह परिस्थिति से भाग खड़ा होता है। मनोवैज्ञानिकों ने इस तरह के बाह्य शारीरिक परिवर्तनों को तीन भागों में बांटा है—।

(1) चेहरा अभिव्यक्ति में परिवर्तन : संवेग के समय चेहरे में महत्वपूर्ण परिवर्तन होते हैं। इसकी अभिव्यक्ति खुशी, उदासी, आश्चर्य, डर, क्रोध तथा घृणा के रूप में होती है। नोबिंग के अनुसार संवेग की अभिव्यक्ति में चेहरे के दोनों भाग का योगदान [illegible] भाग की [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] के कारण [illegible] [illegible] तथा [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] के [illegible] [illegible] [illegible] होता है।

(2) शारीरिक मुद्रा में परिवर्तन : प्रत्येक संवेग में शरीर की एक खास मुद्रा होती है। [illegible] संवेग में व्यक्ति की शारीरिक मुद्रा में ऐसे परिवर्तन होते हैं [illegible] [illegible] [illegible] व्यक्ति का शरीर [illegible] [illegible] [illegible] तथा [illegible] में शरीर [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] के माध्यम से [illegible] [illegible] है कि प्रत्येक संवेग में शारीरिक [illegible] [illegible], डर, क्रोध आदि [illegible] मुद्रा में [illegible]

(3) स्वर अभिव्यक्ति में परिवर्तन : संवेग की स्थिति में व्यक्ति की आवाज में परिवर्तन होता है।